Q8. अफ्रीका के वनस्पति प्रदेशों का परिचय दें तथा उसकी विशेषताओं का वर्णन करें।

→ प्राकृतिक वनस्पति का तात्पर्य उन पेड़, पौधों, बेलों व घासों आदि से है जो किसी विशेष वातावरण में पैदा हो कर स्वतः विकसित होते हैं, किसी भी स्थान की वनस्पति वहाँ की जलवायु पर निर्भर करती है। यह बात अफ्रीका के प्राकृतिक वनस्पति के सम्बंध में भी चरितार्थ होती है। अफ्रीका में कई प्रकार की जलवायु पाई जाती है फलतः यहाँ लम्बे-लम्बे वृक्षों के वनों से ले कर वनस्पति शून्य विरान प्रदेश तक पाए जाते हैं। यहाँ के जलवायु प्रदेशों के अनुसार ही वनस्पति के भी प्रदेश हैं। जलवायु में भी तापमान एवं वर्षा वनस्पति को विशेष प्रभावित करती है। जलवायु के अनुसार अफ्रीका के निम्नलिखित वनस्पति प्रदेशों में बाँटा जा सकता है —

(i) विषुवत रेखिय वनस्पति प्रदेश :- इस क्षेत्र को मध्यवर्ती वन प्रदेश भी कहा जाता है। इस भाग में सालोभर उच्च तापमान एवं 200 cm से अधिक वर्षा होती है। फलतः लम्बे-लम्बे वृक्ष होते हैं। ये वन उष्णार्द्र जलवायु के कारण चिरहरित होते हैं। ये वन अत्यंत घने होते हैं तथा इनकी लकड़ीयाँ बहुत कड़ी होती है। इस क्षेत्र के प्रमुख वृक्ष एबोनी, महोगनी, ताड़, रबर व

Scanned with CamScanner

रोजवूड आदि हैं। आर्थिक दृष्टि से इन वनों का महत्व कम है, क्योंकि कड़ी होने के कारण लकड़ियाँ अनुपयोगी प्राय हो जाती हैं और वनों की सघनता के कारण लकड़ी काटना भी अत्यंत दुष्कर कार्य होता है। इनका विस्तार कांगो बेसिन, गिनी खाड़ी तट, मोजाम्बिक तट व पूर्वि मालागासी में है।

(ii) सवाना वनष्पति प्रदेश :- इस भाग में वार्षिक वर्षा 100-200 cm होती है तथा तापमान कहीं अधिक तो कहीं कम पाया जाता है। अधिक तापमान वाले क्षेत्रों में घास कड़ी व लम्बी होती है तथा पूर्वि अफ्रिका की शीतल जलवायु में घास छोटी व मुलायम होती है। ये प्रदेश वास्तविकता में उष्ण कटिबंधिय घास के मैदान हैं। इस प्रदेश में चौड़ी व कड़ी पत्ते वाली लम्बी घासें ही मिलती हैं। बड़ी घासों के साथ कहीं-कहीं बबूल, छोटे वृक्ष व घास भी मिलती हैं। इनका विस्तार नाइजर नदी से अबिसिनिया पठार तथा पूर्वि अफ्रीका से ले कर तंजानियाँ, रोडेसिया, जाम्बिया व अंगोला तक मिलता है। महादेश के 40% भाग पर इस वनष्पति प्रदेश का विस्तार है।

(iii) भूमध्यसागरीय वनष्पति प्रदेश :- इस भाग में वार्षिक वर्षा 50-100 cm तक होती है तथा सामान्य तापमान पाया जाता है। यहाँ गर्मी की ऋतु पूर्णत: शुष्क होती है तथा वायुभार पेटियों के खिसकने के कारण शीतकाल में ही वर्षा होती है। ये वर्षा पछुआ हवाओं के द्वारा होती है। यहाँ के वृक्षों की जड़ मूसलधार एवं छाल चिकनी होती है। यहाँ के प्रमुख वृक्ष कार्क, ओक, सेंतरा व अंगुर आदि हैं। इसके अलावे कुछ झाड़ियाँ भी उगती है। शुष्क पठारी भागों में इस्पार्टो घास मिलती है। इनका विस्तार अफ्रीका के उत्तरी भाग में तथा दक्षिणी पश्चिमी भाग में है।

Scanned with CamScanner

(iv) उष्ण मरुस्थलिय वनस्पति प्रदेश :- इस भाग में वर्षा का अभाव रहता है तथा वार्षिक वर्षा 20 cm से भी कम होती है। इस भाग में तापमान उच्च पाया जाता है तथा दैनिक तापान्तर अधिक होता है। यहां के वृक्षों में वाष्पण रोकने एवं आर्द्रता बनाए रखने हेतु छाल मोटी व पत्तियाँ छोटी होती हैं, शाखाएं व तने कंटीले होते हैं। यहां के प्रमुख वृक्ष खजूर व बबूल हैं। इसके अलावे कांटेदार झाड़ियाँ भी मिलती हैं। इनका विस्तार सहारा व कालाहारी के मरुस्थलों में मिलता है।

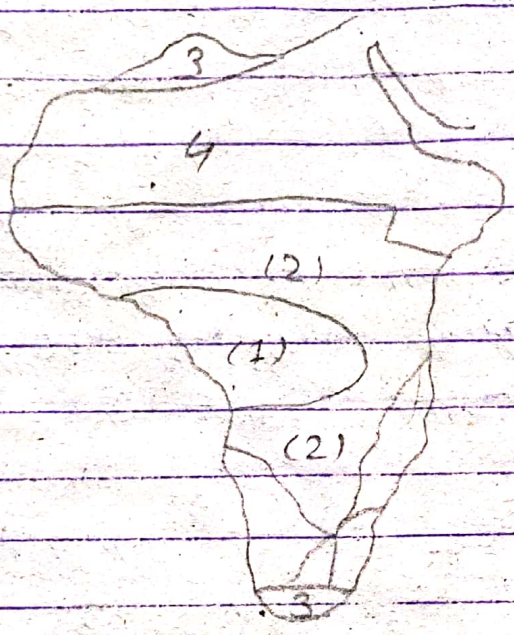

INDEX

1 - विषुवतीय वनस्पति प्रदेश
2 - सवाना वनस्पति प्रदेश
3 - भूमध्यसागरीय वनस्पति प्रदेश
4 - उष्ण मरुस्थलिय वनस्पति प्रदेश
5 - अर्द्धमरुस्थलिय वनस्पति प्रदेश
6 - शीतोष्ण घास मैदान
7 - मानसूनी वनस्पति प्रदेश

(v) अर्द्धमरुस्थलिय वनस्पति प्रदेश :- इस भाग में 20-30 cm तक वर्षा होती है जो मुख्यतः ग्रीष्म ऋतु में ही होती है। यहां की वनस्पतियों में छोटी घासें व झाड़ियाँ प्रमुख हैं। जिन्हें गुल्म कहा जाता है। इनका विस्तार सवाना व मरुस्थलिय प्रदेशों के मध्य

भाग पर पाया जाता है।

(vi) शीतोष्ण घास के मैदान :- इनका विस्तार एक रेखा से उत्तर व मकर रेखा से दक्षिण पाया जाता है। यहाँ वर्षभर छोटी घासे उगती हैं। जो ग्रीष्म ऋतु में हरी व शीत ऋतु में भूरी हो जाती हैं। इस क्षेत्र में थोड़ी वर्षा सदैव होती है एवं तापमान सम बन रहता है।

(vii) मानसूनी वनस्पति प्रदेश :- इस भाग में शीत ऋतु शुष्क होती है एवं गर्मी के अन्त में वर्षा होती है। इसी कारण यहाँ भारत के समान पतझड़ किस्म की वनस्पति पाई जाती है। इसका विस्तार महाद्वीप के पूर्वि भाग पर है।

Scanned with CamScanner